ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

तताँरा वामीरो कथा

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : ६
पाठ का नाम : तताँरा वामीरो कथा
PPT-3

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

वह आश्चर्यचकित तो था परन्तु साथ ही साथ उत्सुक भी था। वह दिन ढलने से बहुत पहले ही लपाती गाँव की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया था जहाँ उसने वामीरो को आने के लिए कहा था। वामीरो के इन्तजार में उसे हर एक पल बहुत अधिक लम्बा लग रहा था। उसके अंदर एक शक भी पैदा हो गया था कि अगर वामीरो आई ही नहीं तो। वह इस बारे में कुछ सोच नहीं पा रहा था। उसके पास प्रतीक्षा करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। उसे सिर्फ उम्मीद की एक किरण नजर आ रही थी और वो भी समय बीतने के साथ -साथ समुद्र के शरीर पर जैसे किरणे डूब रही थी उसी प्रकार कभी भी डूब सकती थी।तताँरा बार - बार लपाती गाँव के रास्तों पर वामीरो के इंतजार में नजरे गाड़ कर खड़ा था। तभी अचानक नारियल के पेड़ों में से कोई एक आकृति सी दिखाई दी ,वो आकृति जैसे -जैसे नजदीक आ रही थी वैसे -वैसे साफ दिखाई देने लगी। उसे देखते ही तताँरा बहुत खुश हो गया क्योंकि वह सचमुच वामीरो ही थी। ऐसा लग रहा था कि वह घबरा रही थी या डरी हुई थी। वह अपने आप को छुपा कर आगे बढ़ रही थी। बीच -बीच में वह डर कर इधर उधर नज़रे घुमा रही थी कि कही कोई उसे देख ना ले। फिर तेज़ क़दमों के साथ आ कर तताँरा के सामने आकर रुक गई।दोनों कुछ बोल नहीं रहे थे। कुछ था जो दोनों के अंदर किसी भावना का संचार कर रहा था।ना जाने कब तक बिना पलक झपकाए दोनों एक दूसरे को देखते रहे। सूरज समुद्र में कहीं डूब गया था अर्थात शाम हो गई थी। अब अँधेरा बढ़ रहा था। अचानक वामीरो को होश आया और वह अपने घर की ओर दौड़ पड़ी। तताँरा अभी ही उसी जगह खड़ा था ,अपनी जगह से बिलकुल भी नहीं हटा और कोई एक शब्द भी नहीं कहा।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

5.दोनों रोज उसी जगह पहुँचते .....जो भयवश सामने आने से झिझक रही थी।

मूर्तिवत - मूर्ति की तरह
निर्निमेष - एकटक
अनवरत - जिसे रोका न जा सके
अडिग - डटे रहना
नियमतः - नियम के अनुसार
हष्ट पुष्ट - हटे कटे
प्रदर्शन - दिखाना
व्याकुल - परेशान
चेष्टा - कोशिश

तताँरा और वामीरो हर रोज उसी जगह मिलने लगे और दोनों एक दूसरे को एकटक नजरों से मूर्ति की तरह देखते रहते। केवल उनके भीतर एक दूसरे के लिए त्याग की वो भावना थी जिसे कोई रोक नहीं सकता था और वो हर समय बढ़ता ही जा रहा था। लपाती के कुछ युवकों को इस प्रेम के बारे में पता चल गया और ये खबर हवा की तरह हर जगह फैल गई।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

वामीरो लपाती गाँव की रहने वाली थी और तताँरा पासा गाँव का। दोनों का सम्बन्ध किसी भी तरह संभव नहीं था। क्योंकि रीतिरिवाज़ के अनुसार दोनों के सम्बन्ध के लिए दोनों का एक ही गाँव का होना जरुरी था। सभी ने वामीरो और तताँरा को समझाने -बुझाने के बहुत प्रयास किये परन्तु दोनों ने किसी की भी बात नहीं मानी। वे अपने नियम के अनुसार हमेशा लपाती के उसी समुद्री किनारे पर मिलते रहे। और लोगो ने दोनों के बारे में बाते फैलानी जारी रखी। कुछ समय के बाद पासा गाँव में 'पशु पर्व 'का आयोजन किया गया। पशु पर्व में हट्टे कट्टे पशुओं के दिखावे के अलावा पशुओं से युवकों की शक्ति परखने की प्रतियोगितायें भी होती थी। साल में एक बार मेला लगता था और सभी गाँव के लोग इसमें भाग लेने आते थे। प्रतियोगिता के बाद नाच -गाना और फिर भोजन सब का प्रबंध किया जाता था। शाम के समय सभी लोग पासा गाँव में इकट्ठे होने लगे। धीरे -धीरे कई तरह के कार्यक्रम शुरू हुए। तताँरा का मन इन में से किसी भी कार्यक्रम में नहीं लग रहा था। उसकी परेशान आँखे तो वामीरों को ढूंढने में व्यस्त थी। तभी उसे नारियल के पेड़ों के झुण्ड में से एक पेड़ के पीछे से कोई झांकता हुआ दिखाई दिया। उसने थोड़ा और पास में जा कर उसे पहचानने की कोशिश की। वह वामीरो थी जो डर के मारे किसी के भी सामने आने से परेशान हो रही थी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

6.उसकी आँखे तरल थी। होंठ काँप रहे .....सब घबराए हुए थे।

विह्वल - भावुक
किंकर्तव्यविमूढ़ - हका बका होना
असहनीय- जो सहन न हो सके
निषेध - जो न किया जा सके
क्षोभ - बहुत अधिक गुस्सा
खीझ - चीड़
अनायास - अचानक
शमन -शांत

जब तताँरा ने वामीरो को देखा तो उसकी आँखें नमी से भरी थी और उसके होंठ डर कर काँप रहे थे। तताँरा को देखते ही वामीरो फुट -फुटकर रोने लगी। तताँरा इस तरह वामीरो को रोता देखकर भावुक हो गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या बोले। वामीरो के रोने की आवाज लगातार बढ़ती जा रही थी। तताँरा हक्का-बक्का हो गया था उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। वामीरो के रोने की आवाज सुनकर वामीरो की माँ वहाँ आ गई और दोनों को एक साथ देख कर गुस्सा हो गई।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

उसे सभी गाँव वालों के सामने अपमानित महसूस हो रहा था। इस बीच गाँव के लोग भी वहाँ आ गए। वामीरो की माँ को और भी ज़्यादा गुस्सा आ गया। उसने वामीरो को कई तरह से अपमानित करना शुरू कर दिया। गाँव वाले भी तताँरा के विरोध में बोलने लगे। लोगों की बातों को सुनना अब तताँरा के लिए सहन कर पाना मुश्किल हो रहा था। वामीरो का रोना अब भी शांत नहीं हुआ था। अब तताँरा भी गुस्से में आ गया। पहली बात पर तो उसे गुस्सा इस बात का था की गाँव की परम्पराओं के कारण उसका और वामीरो का विवाह नहीं हो सकता था और दूसरा इस समय वह कुछ नहीं कर पा रहा था। वामीरो का दुखी होना उसके गुस्से को और अधिक बड़ा रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करना चहिए । अचानक उसका हाथ उसकी तलवार पर आकर टिक गया। गुस्से से उसने तलवार निकली और कुछ सोचने लगा। उसका गुस्सा लगातार आग की तरह बढ़ता ही जा रहा था। लोगों में डर बैठ गया। हर जगह सन्नाटा सा छा गया। जब तताँरा को कोई रास्ता दिखाई न दिया तो उसने अपने गुस्से को शांत करने के लिए अपनी पूरी शक्ति से तलवार को धरती में गाढ़ दिया और अपनी पूरी ताकत से उसे खींचने लगा। वह पसीना -पसीना हो गया। सभी डरे हुए थे कि अब क्या होगा।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

7.वह तलवार को अपनी …….. "तताँरा तताँरा ता.... ताँ.... रा .... " पुकार रही थी।

दुर्भाग्यवश - बदकिस्मती
विभक्त - अलग
छटपटाने - तड़फने

तताँरा ने जो तलवार गुस्से से धरती में गाड़ दी थी वह उस तलवार को अपनी ओर खींचता हुआ बहुत दूर तक पहुँच गया था। अब वह थक कर हाँफ रहा था। अचानक जहाँ तक तताँरा ने लकीर खिंच ली थी ,वहाँ पर दरार होने लगी। ऐसा लग रहा था मानो धरती के दो टुकड़े होने वाले हैं। एक गरजन सी होने लगी और जो लकीर तताँरा ने खींची थी उस लकीर की सीध में धरती फटती जा रही थी। ऐसा लग रहा था कि तताँरा द्वीप को क्रोध में काटता जा रहा था। सभी लोग डर कर काँपने लगे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

किसी ने भी ये नहीं सोचा था कि इस तरह कुछ होगा ,वे सभी लोग सहम गए। उधर वामीरो फटती हुई धरती के किनारे चीखते हुए दौड़ रही थी -तताँरा.....तताँरा.....तताँरा परन्तु उसकी ये चीखें मानो उस गरजना में कहीं खो गई थी अर्थात तताँरा को उसकी चीखें सुनाई नहीं दी।
जब धरती दो टुकड़ों में बांटने लगी तो सबसे बड़ी बदकिस्मती ये थी कि तताँरा दूसरी तरफ था। जब तताँरा द्वीप के आखरी सिरे तक धरती को चीरता हुआ पहुँचा ,तब तक द्वीप के दो टुकड़े हो चुके थे। तताँरा द्वीप के एक ओर था और वामीरो दूसरी ओर। तताँरा को जैसे ही होश आया ,उसने देखा कि द्वीप के जिस ओर वह है वो टुकड़ा समुद्र में धँसने लगा है। अब वह तड़पने लगा ,वह छलांग लगा कर दूसरी ओर जाना चाहता था परन्तु उसकी पकड़ ढीली पड़ गई और वह निचे की ओर फिसलने लगा। वह लगातार समुद्र की तरफ फिसल रहा था। उसके मुँह से सिर्फ एक ही चीख निकल रही थी वामीरो.....वामीरो.....वामीरो.....वामीरो....., लेकिन ये चीख कहीं डूबती हुई सी लग रही थी। उधर वामीरो भी लगातार तताँरा को पुकारती जा रही थी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

8.तताँरा लहूलुहान हो चूका था... …….. किन्तु कोई सुराग नहीं मिला।

अचेत - बेहोश
भूखंड - भूमि का टुकड़ा
विलग - अलग

(यहाँ लेखक ने तताँरा से बिछड़ कर वामीरो के हाल का वर्णन किया है)
दूसरी ओर आने की कोशिश करते -करते तताँरा लहूलुहान हो गया था। अब उसमें शक्ति नहीं बची थी वह बेहोश होने लगा था और थोड़ी देर बाद उसे कोई होश नहीं रहा। अब वह उस कटे हुए द्वीप के उस आखिरी भू -भाग पर बेहोश पड़ा हुआ था जो संयोगवश उस द्वीप से जुड़ा हुआ था। बहता हुआ तताँरा कहाँ गया ,उसके बाद उसका क्या हुआ ये कोई नहीं जान सका। इधर वामीरो तताँरा से अलग होने के कारण पागल हो गई। वह हर समय बस तताँरा को ही खोजती रहती और उसी जगह आकर घंटों बैठी रहती जहाँ वो तताँरा से मिलने आया करती थी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

उसने खाना -पीना छोड़ दिया था। परिवार से वह कही अलग हो गई। लोगो ने उसे ढूंढ़ने की बहुत कोशिश की परन्तु अब वामीरो का भी कोई सुराग नहीं मिला कि वह कहाँ गई।
आज न तताँरा है और न वामीरो किन्तु उनकी यह प्रेमकथा घर -घर में सुनाई जाता है। निकोबारियों का मत है कि तताँरा की तलवार से कार -निकोबार के जो टुकड़े हुए ,उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है जो कार निकोबार से आज 96 कि.मी. दूर स्थित है। निकोबारी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक सम्बन्ध करने लगे। तताँरा- वामीरो की त्यागमयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।आज ना तो तताँरा है और ना ही वामीरो है,परन्तु फिर भी आज उनकी प्रेम कथा हर घर में सुनाई जाती है। निकोबार के निवासियों का मानना है कि तताँरा की तलवार से कार -निकोबार के जो दो टुकड़े हुए, उसमे से दूसरा टुकड़ा आज लिटिल अंदमान के नाम से प्रसिद्ध है जो कार -निकोबार से 96 कि.मी. दूर स्थित है।निकोबार निवासीयों ने इस घटना के बाद अपनी परम्परा को बदला और दूसरे गाँव में भी विवाह सम्बन्ध बनने लगे। तताँरा - वामीरो की जो एक -दूसरे के लिए त्यागमयी मृत्यु थी वह शायद इसी सुखद बदलाव के लिए थी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow